UGC Approved, Journal No. 49321
Impact Factor : 7.0

ISSN : 0976-6650

शोध दृष्टि

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 15, No. 2

February, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

६	हिन्दी सिनेमा में प्रयुक्त स्त्री छवियाँ और विमर्श के बिंदु **डॉ0 मुन्ना कुमार पांडेय**	61-63
६	1942 के आंदोलन में गाज़ीपुर की महिलाओं का योगदान **अंकेश शुभम पांडेय**	64-68
६	दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में राजनीतिक समाज एवं संस्कृति **गरूण कुमार उपाध्याय**	69-74
६	गोरखपुर जनपद में पर्यावरणीय आन्दोलन एवं जागरुकता **मु0 शाहिल अन्सारी**	75-80
६	हिन्दी आत्मकथा : अवधारणा एवं विकास **प्रेमचन्द्र रजक**	81-86
६	शैक्षिक नवाचार एवं दायित्वबोध : एक अध्ययन **प्रो0 सरस्वती घोष** एवं **प्रियंका कुमारी**	87-89
६	विकासखण्ड जखनियाँ में परिवार नियोजन : एक प्रतीक अध्ययन **कुसुम यादव**	90-96
६	कमलेश्वर की कहानियों में नारी चेतना **किरन रानी एवं डॉ0 कुलदीप कौर**	97-98
६	ईश्वरसिद्धिः **डॉ0 उपेन्द्र पाण्डेय**	99-100
६	नशा उन्मूलन में एंटी ड्रग्स टास्क फोर्स की भूमिका **शिवानी धूलिया** एवं **डॉ० के०एन०एस० यादव**	101-105
६	समकालीन भारतीय कला में अर्पिता सिंह की कला का कलात्मक अनुशीलन **विनीता देवी**	106-110
६	आधुनिक सामाजिक परिवर्तन और मुस्लिम महिलाएँ : सशक्तिकरण और परंपरा की गतिशीलता **शाहीन खान**	111-116
६	शस्य गहनता : कुशीनगर जनपद (उ0प्र0) का प्रतीक अध्ययन **डॉ0 विनय कुमार यादव**	117-121
६	अथर्ववेद में पर्यावरणीय संचेतना **ज्योति गुप्ता**	122-124
६	कथक की समृद्ध परम्परा : लखनऊ **डॉ0 वन्दना चौबे** एवं **मोनालिसा रॉय**	125-126
६	संजीव के उपन्यास : स्त्री पीड़ा का दस्तावेज **दीपक तिवारी** एवं **डॉ0 रामयज्ञ मौर्य**	127-130
६	ट्रैक 2 कूटनीति की प्रकृति और कार्यक्षेत्र **रंजीत कुमार** एवं **डॉ0 जयकुमार मिश्र**	131-134
६	द्विवेदी युगीन काव्य में राष्ट्रीय चेतना **श्रीमती मीना**	135-138
६	वेदों का वर्तमान व्यावहारिक अनुशीलन एवं उपयोगिता **ऊषा कुमावत** एवं **डॉ0 प्रमोद कुमार वैष्णव**	139-142

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 15, No. 2, February 2024
Impact Factor : 7.0
ISSN : 0976-6650

ट्रैक 2 कूटनीति की प्रकृति और कार्यक्षेत्र

रंजीत कुमार
शोध छात्र, राजनीतिशास्त्र विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उ0प्र0
डॉ0 जयकुमार मिश्र
शोध निर्देशक, राजनीतिशास्त्र विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उ0प्र0

ट्रैक 2 कूटनीति या अनौपचारिक कूटनीति जिसको अक्सर बैक चैनल डिप्लोमेसी भी कहा जाता है। ट्रैक 2 का मतलब गैर सरकारी से है, जिसमे निजी नागरिकों या व्यक्तियों के समूहों के बीच अनौपचारिक बातचीत संपर्क और अनौपचारिक गतिविधियाँ होती हैं, उन्हें कभी कभी गैर राज्य अभिनेता कहा जाता है। ट्रैक 2 कूटनीति के प्रमुख अंग गैर सरकारी संगठन (एन०जी०ओ०) विश्वविद्यालय शिक्षाविदों, पत्रकारों, प्रबुद्ध मंडल, व्यापारिक नेताओं, नोबेल पुरस्कार विजेताओं, धार्मिक गुरुओं और पूर्व राजनियकों पूर्व राजनीतिक इत्यादि है। ट्रैक 2 कूटनीति का मुख्य उद्देश्य दो देशों के बीच सम्बन्धों को मजबूत बनाने में एक मध्यस्थ की भूमिका निभाना या दो देशों के बीच एक पुल प्रदान करना है। जब अन्तर्राष्ट्रीय जगत मे वैश्विक मुद्दे बहुत विवादस्पद हो जाते हैं और सरकारों द्वारा उनका सफलतापूर्वक संचालन करना कठिन हो जाते हैं, तो ट्रैक 2 कूटनीति अनौपचारिक गतिविधियों या क्रियाओं द्वारा द्विपक्षीय संम्बन्धों और अन्तर्राष्ट्रीय मुददों पर वार्ता करने और सम्बन्धों को मजबूत करने में सहायक सिद्ध होता है। ट्रैक 2 कूटनीति की व्यापक परिभाषा व्यक्तियों, समूहों के बीच बातचीत पर प्रकाश डालना है, जो अनौपचारिक वार्ता होती है। ट्रैक 1 कूटनीति सभी द्विपक्षीय या बहुपक्षीय अधिकारिक वार्ता सरकारी कूटनीति को परिभाषित करती है। लम्बे समय से चले आ रहे संघर्षो के बारे में बैठकर बात करना, उनका प्रबंधन करने का अधिकारिक राजनायिक संचार स्पष्ट तरीका था, लेकिन कई मामलों में विरोधी घरेलू स्तर पर खुले तौर पर वार्ता नहीं कर सकते हैं, जहाँ विशेष रुप से दो पक्षों राजनयिक सम्बन्धों में कमी हो या अधिकारिक तौर पर दूसरों के अस्तित्व से इनकार किया जा रहा हो। ऐसी तमाम परिस्थितियों के कारण विरोधियों ने अक्सर अनौपचारिक चैनलों का रुख किया है। अनौपचारिक चैनलों के इस पद्धति को ट्रैक 2 कूटनीति के रूप में जाना जाता है, हालाकि ट्रैक 2 वार्ता दशकों से विभिन्न संघर्ष क्षेत्रों में होते रहते हैं। कुछ विद्वानों का कहना है कि ट्रैक 2 वार्ता का पहल लगभग प्रथम विश्वयुद्ध के आस–पास से देखी जा रही है, लेकिन मुख्य रुप से शीतयुद्ध की समाप्ति के पश्चात ट्रैक 2 कूटनीति की लोकप्रियता में तेजी से वृद्धि हुई है। सर्वप्रथम ट्रैक 2 कूटनीति शब्द का इस्तेमाल अमेरिकी विदेश सेवा अधिकारी जोसेफ मान्टविले ने किया था। 1981 में जोसेफ मॉन्टविले द्वारा ट्रैक 2 कूटनीति शब्द का इस्तेमाल अनौपचारिक संघर्ष समाधान संवादों को दर्शाने के लिए किया गया था। ट्रैक 2 कूटनीति एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य विरोधी समूहों या राष्ट्रों के सदस्यों के बीच अनौपचारिक बातचीत राजनितियों को विकसित करना सार्वजनिक विकल्प को प्रभावित करना और भौतिक संसाधनों को इन तरीकों से व्यवस्थित करना है जो उनके संघर्ष को हल करने में मदद कर सकें। ट्रैक 2 कूटनीति को इस प्रकार गढा गया है कि वह अधिकारिक कूटनीति को सहायता करने में मदद कर सके, ट्रैक 2 बिना किसी शर्त, बिना किसी सौदेबाजी किये, अनौपचारिक रुप से बातचीत करके संभावित समाधान तलाशकर संघर्षो का प्रबन्धन करना इसका दृष्टिकोण है।

ट्रैक 2 कूटनीति के अभिनेताओं का कहना है कि जटिल अन्तर्राष्ट्रीय संघर्षों पर सरकारों का कोई एकाधिकार नहीं है। जिसके कारण औपचारिक और अनौपचारिक ट्रैकों के बीच सम्बन्ध स्थापित कर उसका उपयोग संघर्ष समाधान पर किये जाने के कारण सकारात्मक परिणाम उत्पन्न हो सकते हैं, जिसे आज हम ट्रैक 2 कहते हैं। यह शब्द 1981 मे गढ़ा गया लेकिन प्रचलन मे काफी पहले ही आ चुका था। हालांकि यह कहना थोड़ा मुश्किल होगा कि ट्रैक 2 शुरु कब हुआ। कुछ विद्वानों का कहना है कि अभिजात वर्ग और विभिन्न शान्ति समाजों के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर सामान्य चर्चा प्रथम विश्व युद्ध के आस पास शुरु हुई। हालांकि उस समय के ट्रैक 2 में बहुत कुछ गतिविधि अनुभवहीन थी, जिसे आज के सक्रिय लोगों द्वारा इसे नहीं माना जाएगा।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मोरल रिआर्ममेंट नामक एक निजी समूह के द्वारा नागरिक समाजों के बीच सम्बन्ध को मजबूत करने और मेल–मिलाप बढ़ाने के उद्देश्य से जर्मन फ्रान्सीसी और बाद में ब्रिटिश नागरिकों को शामिल करते हुए रिट्रीट आयोजित की। 1928 से लेकर 1961 तक के समय मे इंस्टीट्यूट

ऑफ पैसिफिक रिलेशंस (आइ०पी०आर०) नामक अन्तर्राष्ट्रीय एन०जी०ओ०जो० एशिया–प्रशांत क्षेत्र मे अनौपचारिक वार्ता का एक प्रमुख चैनल था।

शीतयुद्ध के दौरान दो महाशक्तियों के बीच निरंतर ट्रैक 2 गतिविधियाँ हुई। अनौपचारिक पगवॉश सम्मेलन और डटिमाउथ सम्मेलन के कारण राजनीतिक मामलों और शान्ति सुरक्षा के मुददों पर बातचीत के रास्ते खुले। संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ की सरकारें अप्रत्यक्ष रुप से अनौपचारिक बातचीत को प्रोत्साहित किया करती थी, लेकिन कभी कभी मुश्किले बढ़ जाती थी, इन संवादों के कारण ऐसे विचारों का उदय हुआ, जो बाद में हथियार नियंत्रण समझौतों में शामिल हुए। इन अनौपचारिक चर्चाओं के प्रमुख व्यक्ति राजनायिक और अधिकारी नहीं थे, लेकिन लगभग अपनी सरकारों के सम्पर्क में थे और शान्ति सुरक्षा जैसे मुददों पर चर्चा के लिए मिलते थे।

शीतयुद्ध के समय ऐसी चर्चाएँ कभी–कभी एक मात्र अनौपचारिक तरीके से हो सकती थी, 1960 के दशक के मध्य में व्यापक रुप से ट्रैक 2 का पहला उदाहरण सामने आया जब एक पूर्व आस्ट्रेलियाई राजनयिक जॉन बर्टन और यूनिवर्सिटी कालेज लंदन और कुछ अन्य स्थानों पर उनके सहयोगियों द्वारा अपने सिद्धान्तों के आधार पर झगड़ों को समझने और शान्त करने की कोशिश की। ट्रैक 2 कूटनीति को अन्तर्राष्ट्रीय और अन्तर राष्ट्रीय संघर्षो मे एक अकादमिक रुप से आधारित अनौपचारिक तृतीय पक्ष का दृष्टिकोण सीधे संचार के लिए संघर्षरत पक्षों के प्रतिनिधियों को एक साथ लाना है। तीसरा पक्ष जिसमें आम तौर पर सामाजिक वैज्ञानिको का एक चैनल होता है, जिनके पास सामूहिक प्रक्रियाओं और अन्तर्राष्ट्रीय मुददों और संघर्ष क्षेत्र के साथ विशेषज्ञता होती है। तीसरे पक्ष की भूमिका अन्य मध्यस्थों से अलग होती है, यह किसी भी प्रकार का समाधान प्रस्तावित नहीं करते और ना ही थोपते हैं बल्कि इनका प्रयास रहता है कि जटिल प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाये जिनसे दो पक्षों के बीच बातचीत से ही समस्या का समाधान हो जाय।

तीसरे पक्ष का कार्य ऐसी प्रक्रिया को विकसित करना है जो मानदंड स्थापित करे सकारात्मक माहौल बनाए और कभी कभार जरुरत पड़ने पर हस्तक्षेप की पेशकश भी करें। 1968 मे ट्रैक 2 कूटनीति शब्द अपने अधिकारिक रुप से आने के बाद विभिन्न विद्वानों द्वारा अन्य प्रकार के कूटनीतिक शब्दों का भी उपयोग किया गया। जैसे मल्टी ट्रैक 2 डिप्लोमेसी, (डायमंड और मैकडॉनल्ड्स 1996) अनौपचारिक कूटनीति (वोल्कन एट अल 1991) सतत संवाद (सॉन्डर्स 1999) और इंटरैक्टिव संघर्ष समाधान (फिशर 1997) शन फिश रवह कनाडा के एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक जो अपने जीवन के उत्तरार्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका में पढ़ाए और रहे समान संघर्ष समाधान वार्ताविधियों और इस क्षेत्र के विकास मे महत्वपूर्ण योगदान दिया जो अक्सर किसी तीसरे पक्ष द्वारा संचालित और अनौपचारिक तथा परस्पर प्रभावी प्रकृति की होती है।

ट्रैक 2 के संभावित और वैध अभिनेताओं की धारणा के आधार पर राजनयिको को दो समूहों में विभाजित किया जा सकता है एक जो ट्रैक 2 अभिनेताओं को व्यापक रुप से परिभाषित किया तथा दुसरा जिन्हे संकीर्ण रुप से प्रभावित किया। ट्रैक 2 कूटनीति के व्यापक रुप से परिभाषित तथा संभावित और वैध तरिके से अभिनेताओं की श्रृखंला में अधिकांश गैर सरकारी संगठनों नागरिक समाज संगठनों मीडिया नागरिकों व्यापारियों और स्वतंत्र अनुसंधान संस्थाओं अनुभवी संघर्ष कर्ता को अभिनेता माना जाता है ट्रैक 2 कूटनीति के अभिनेताओं को जिन राजनयिको ने व्यापक रुप से देखा है उनका कहना है कि ट्रैक 1 कूटनीति काफी हद तक परिवर्तित हो गया है, हालांकि उनका कहना यह भी था कि समकालीन परिस्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष से निपटने के लिए ट्रैक 1 कूटनीति पर्याप्त नहीं है। जिसका कारण अन्तर्राष्ट्रीय मुददो में बढ़ती जटिलता परस्पर निर्भरता और समसायायिक मुददो से बहुयामी तरीके से निपटने की आवश्यकता है।

ट्रैक 2 कूटनीति के अभिनेताओं को कुछ राजनयिको ने संकीर्ण तरीके से परिभाषित किया जो अनुसंधान संस्थाओं व्यवसायियों और विशेषज्ञो और अनौपचारिक लोगो द्वारा बात चीत कर ट्रैक 1 कूटनीति की रुप रेख का समर्थन करता है उदाहरण के तौर पर कई राजनयिक ऐसे थे, जो अनौपचारिक कूटनीति के गतिविधियों मे संलग्न थे और कुछ जो राजनयिक पदों पर नही होते हुए भी अन्य लोगों की तरह होते हुए भी राजनयिक गतिविधियों के संपर्क में थे ट्रैक 2 कूटनीति का प्रयास अधिकारिक पद्धति के बाहर आफ द रिकार्ड काम करने की प्रवृत्ति है जो गैर अधिकारिक लोगों द्वारा तथा अभिनेताओं मे व्यवसायियों की भूमिका महत्वपूर्व है, ऐसे राजनयिक जिनका ट्रैक 2 पर कार्यालय दृष्टिकोण आर्थिक हित और राजनीतिक हालकों को प्रभावित करने मे रहा है।

ट्रैक 2 कूटनीति की मजबूती उसकी स्वतंत्रता है जो उसके अभिनेता और समर्थन अपने विचार व्यक्त करने के लिए पुर्व रुप से निष्पक्ष और स्वतंत्र हैं। ट्रैक 2 गतिविधियाँ राजनीतिक और संवैधानिक शक्तियों से बातचीत नहीं होते हैं, इसलिए सभी अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष समाधान मुद्दों पर खुल कर अपनी बात रखते हैं, ट्रैक 2 कूटनीति अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष के कई पहलुओं पर व्यक्ति विश्लेषण की सबसे महत्वपूर्ण इकाई का प्रतिनिधित्व करता है।

ट्रैक 2 अनौपचारिक चर्चा के द्वारा पार्टियो की असंगत स्थिति की जॉच करके उनके संघर्ष के मूल कारणों का पता लगाने और सार्वजनिक दृष्टिकोण से संभावित समाधानो का पता लगाने तथा बेहतर संबन्धो को स्थापित कर समस्या समाधान को हल करने का प्रत्यन्न करता है। ट्रैक 2 कूटनीति अभिनेताओं के प्रयासों से सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक रुप से .वंचित समूहों को एक मंच देकर मजबूत बनाता है। जिससे वह अपनी समस्याओं को दुनिया के सामने रख सकते हैं, जिसके द्वारा अपने राष्ट्रों और समूदायों मे शान्ति स्थापना की प्राप्ति कर सकते हैं। ट्रैक 2 कूटनीति हिंसक संघर्ष से पूर्व और हिंसक संघर्ष के बाद दोनों ही परिस्थितियों मे प्रभावी है यह हिंसक संघर्ष की स्थिति मे शान्ति स्थापित करने में रोकथाम का एक प्रभावी साधन है और संघर्ष के बाद शान्ति निर्माण की स्थिति को सामान्य बनाए रखने का प्रभावी उपकरण है।

ट्रैक 2 कूटनीति जमीनी स्तर पर कार्य करता है और उसकी मध्यस्थ नेतृत्व क्षमता जो सीधे संघ के संपर्क मे रखती है, यह किसी प्रकार के चुनावो चक्रों से प्रभावित नहीं होता है और लोगों एवं संगठनों के बीच शामिल हो कर कार्य करता है। ट्रैक 2 कूटनीति के अनेकों फायदा होने के बावजूद भी कई कमजोरियाँ है जैसा कि .अन्य किसी सामाजिक राजनीतिक रणनीति के साथ होता है। ट्रैक 2 कूटनीत का संचालन सरकार से इतर अनौपचारिक तरिकों से जैसे गैर सरकारी संगठनों निजी नागरिकों प्रवासियों आदि से संचालित होती है।

इस कारण यह अधिकारिक ट्रैक 1 कूटनीति और सरकार के दायरे से बाहर आती है। इसलिए ट्रैक 2 की एक मुख्य कमजोर कडी यह भी माना जा सकता है, ट्रैक 2 के अभिनेताओं के पास राजनीतिक शक्ति की कमी के कारण अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष समाधान को प्रभावित करने की क्षमता कम हो जाती है। इसलिए कभी कभार बहुत लम्बी प्रक्रिया के कारण बहुत समय लग जाता है और जब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संघर्ष तथा तनाव अधिक बढ जाता है तो ट्रैक 2 वार्ताओ का विकल्प सीमित रह जाता है। यहां संघर्ष के युद्ध चरण पर परिवर्तन को प्रभावित करने की क्षमता कम होती है ट्रैक 2 के प्रतिभागियो के पास संसाधन की भी कमी रहती है और वार्ताओं के दौरान निरंतर लाभ उठाने और समझौतो के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक संसाधन सीमित ही होते है।

ट्रैक 2 अभिनेता सत्तावादी शासन मे प्रभावी नहीं होते क्योंकि यह नेताओं के प्रभाव मे नहीं होते हैं, इसलिए ट्रैक 2 के अभिनेता राजनीतिक शक्ति की कमी के कारण ज्यादातर मामलों में खराब प्रदर्शन के कारण जनता के प्रति जवाबदेह नहीं होते हैं इसलिए ट्रैक 2 अभिनेता संगठन अपने समन्वय की कमी के कारण कुख्यात है।

ट्रैक 2 कूटनीति एक संघर्ष समाधान दृष्टिकोण के रुप मे ताकत और कमजोरियाँ दोनों है, कमजोरियाँ स्पष्ट रुप से दृष्टिकोण की उपयोगिता को सीमित करती है, लेकिन इनकी ताकत अभी भी शान्ति और सामाजिक सदभाव के नाम पर आशा प्रदान करती है। ट्रैक 2 कूटनीति को तीसरी श्रेणी का कहा जाता है, जिसका उपयोग संघर्ष समाधान के लिए अक्सर विरोधी बनाने के लिए किया जाता है। दलों की सक्षम तथा उसका उसका उपयोग संघर्षो को हल करने में कर सकते है। यह प्रतिक्षण अलग–अलग परिस्थितियों विवादों और राष्ट्रीय संघर्षो में लागू किया जा सकता है। ट्रैक 2 कूटनीति के अभिपास मे समाज के सभी प्रकार के प्रतिभागियों को शामिल किया जाता है, जिसमे जमीनी स्तर से लेकर निजी नागरिकों तथा उच्च स्तरीय राजनीतिक हस्तियॉ और ज्यादातर निजी क्षमता वाले भाग लेते है, ट्रैक 2 के गतिविधियों मे संचार विश्लेषण सुलह सहयोग और बातचीत जैसे कार्यक्रम पर बल देती है, ट्रैक 2 गतिविधियों के द्वारा ट्रैक 1 के कार्यक्रम को बल या समर्थन देने का कार्य किया जाता है।

इस प्रकार के ट्रैक 2 कार्यक्रमों के द्वारा पुराने संघर्षो को हल करने तथा उनके समर्थन के लिए जमीनी स्तर पर बल दिया जाता है। किसी भी कूटनीति मे आरपार संवाद और परामर्श का उपयोग एक दूसरे के सहयोग के लिए मिलकर किया जा सकता है।

निष्कर्ष

ट्रैक 2 कूटनीति प्रकृति एवं कार्यक्षेत्र वर्तमान समय में बहुत व्यापक हो गया है। पिछले कुछ दशको में दुनिया भर में ट्रैक 2 कूटनीति की कार्य और लोकप्रियता उम्मीद के साथ बढ़ी है, विदेश नीति के एक भाग के रुप मे ट्रैक 2 कूटनीति संघर्ष समाधान तथा शान्ति स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है ट्रैक 2 कूटनीति अनौपचारिक गैर सरकारी और परोपकारी तथा खुले विचारों वाला बातचीत है ट्रैक 2 कूटनीति राजनीतिक रुप से आशावादी होता है यह वास्तविक संघर्ष पर सर्वोच्च विश्लेषण एवं तर्क संगत तथा मानवीय क्षमताओं के आधार पर हल करने का प्रयास करता है।

अन्तर्राष्ट्रीय मुददो का विश्लेषण करने और विदेश नीति मे ट्रैक 2 कूटनीति की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए सरकारी तंत्र का भी सहयोग होना आवश्यक है। विदेश नीति मे ट्रैक 2 कूटनीति या अनौपचारिक मध्यस्थो का योगदान अक्सर अप्रत्यक्ष होता है, अनौपचारिक मध्यस्थता दोनों पक्षों की वैज्ञानिक और राजनीतिक संस्कृति का आदान प्रदान करती है जिससे दोनो पक्षो को बातचीत के लिए अधिक परिपक्व बनाया जा सकता है और अवसर मिलने पर दोनो पक्षो के बीच बातचीत करने और समाधान का निर्णय लिया जा सके। ट्रैक 2 कूटनीति की प्रकृति और कार्यक्षेत्र बेहद सरल सौम्य और सहज है यह विश्व शांति स्थापना मे एक क्रान्ति ला सकती है। ट्रैक 2 कूटनीति के अभिनेता गैर सरकारी संगठन, शिक्षाविद, पत्रकार, प्रबुद्ध मंडल व्यापारी, नागरिक समाज आदि सब समाज को समर्पित है इसलिए यह कूटनीति, मानवता और विश्व बन्धुत्व के आधार पर ही शान्ति स्थापना और विश्व का निर्माण करना चाहेगें।

सन्दर्भ सूची :

1. Rithinking Track Two Diplomacy, The Middle East and south Asia Dalia Dassa Kaye, Netherlands Institule of International Relations Cligendael Cligendael paper No 3 ISBN 90-5031-101-6
2. Track Two Diplomacy in Theory and Practice, Peter Jones, With a foreword Joy George P. Shultz Stanford University Press Stanford California, ISBN 9780-8047-9632-3
3. Post 1998- track II Diplomacy between India and the USA : An India Perspective, Bhabani Mishra
4. Institute for Defence studies and Analyses, strategic analysis, Vol. 28, No.1, Jan-Mar 2024.
5. Conducting Track II Peace making Heidi Burges and Guy Burgess United State Institute of Peace Washington D.C. University of Colorado Conflict Information Consortium. United State Institute of Peace 1200 17th Streeet NW, Suite 200 Washington, DC 20036-3011, ISBN 978-1-60127-069-6
6. Talking to the Enemy, Track two Diplomacy in the Middle East and South Asia. - Dalia Dassa Kaye,
7. (RAND) National Security Research Division, ISBN : 978-0-8330-4191-3, Published 2007 by the rand corporation
8. Track one and a half diplomacy and the Complementarity of tracks Jefferey Mapendere, Assistant Director Conflic Resoulition program center, COPOJ-Culture of peace online journal 2(1),66-81, ISSN-1715-538x, www.copj.ca.
9. Track-two diplomacy or a Resolution approach to International and inter-societal conflicts Mazaffer Ercan YILMAZ Asst. Prof. Balikesir University, IIBF, Department of International Relations, Bandrima/Balikesir. D.E.U.I.I.B.F. Dergisi CItt:19 Sayi: 2, Yil:2004, 55:155-167.
10. Trading paths of diplomacy : track I & Track II. https://www.chroniclindia.in/articles/197-treading-paths-of-diplomacy-track-I-amp-track-II